**आज अगर दुनिया में बिकने वाला हर सातवां आईफोन भारत में ही बन रहा है, तो इससे देश में 2014 में शुरू किए गए 'मेक इन इंडिया' अभियान की सार्थकता ही साबित होती है। विकसित भारत के सपने को पूरा करने के लिए ऐसी कामयाबियों को अन्य उत्पादों के संदर्भ में दोहराना भी जरूरी है।**

# मेक इन इंडिया

आईफोन निर्माता कंपनी एपल ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान भारत से करीब दस अरब डॉलर के आईफोन का निर्यात करके, जो उपभोक्ता वस्तुओं के क्षेत्र में किसी सिंगल ब्रांड उत्पाद का भारत से किया गया अब तक का सबसे बड़ा निर्यात है, एक नया कीर्तिमान तो स्थापित किया ही है, देश की अर्थव्यवस्था पर इसके सकारात्मक असर भी दृष्टिगोचर हो रहे हैं। एपल का वित्तीय वर्ष 2024-25 तक उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (पीएलआई) के तहत दस अरब डॉलर का निर्यात-लक्ष्य था, जिसे एक वर्ष पहले ही हासिल कर लेना निस्संदेह एक बड़ी उपलब्धि है। ब्लूमबर्ग की हालिया रिपोर्ट भी कहती है कि एपल ने 2023-24 के दौरान भारत में 14 अरब डॉलर के आईफोन निर्मित किए, और अब दुनिया में बिकने वाले कुल आईफोन के 14 फीसदी का उत्पादन भारत में ही हो रहा है। आज अगर दुनिया में बिकने वाला हर सातवां आईफोन भारत में ही बन रहा है, तो इससे 2014 में शुरू 'मेक इन इंडिया' अभियान की सार्थकता ही साबित होती है। उल्लेखनीय है कि अमेरिका व चीन के बीच तल्ख रिश्तों को देखते हुए एपल को अपनी आपूर्ति श्रृंखला में विविधता लाने की जरूरत महसूस हुई। इसलिए उसने चीन से, जो अब भी सबसे ज्यादा आईफोन बनाने वाला देश है, बाहर कुछ विनिर्माण प्लांट लगाने की सोची और दुनिया के दूसरे सबसे बड़े स्मार्टफोन बाजार भारत की ओर रुख किया। 2017 में भारत में आईफोन का निर्माण शुरू करने के बाद एपल ने पीएलआई योजना के अनुरूप ताइवान की दिग्गज कंपनियों, फॉक्सकॉन और पेगाट्रॉन की मदद से अपने स्थानीय उत्पादन का विस्तार किया। इसके अलावा, कर्नाटक में विस्ट्रान कारपोरेशन का भी संयंत्र है, जिसका कुछ ही समय पहले टाटा समूह ने अधिग्रहण किया था। गौरतलब है कि पिछले एक दशक से भी ज्यादा पहले देश में स्मार्टफोन का प्रसार हुआ और शुरुआत में भारतीय खरीदारों का रुझान अपने बजट के अनुकूल चीन में निर्मित हैंडसेट की ओर ही दिखा,

लेकिन हालिया वर्षों में स्टेटस सिंबल के तौर पर आईफोन के प्रति भारतीयों का आकर्षण तेजी से बढ़ा है। एपल के इस प्रसार से देश में विदेशी मुद्रा की आमद बढ़ने के साथ एक सशक्त विनिर्माण केंद्र के रूप में भारत की प्रतिष्ठा भी स्थापित हुई है। यही नहीं, पीएलआई की शुरुआत के बाद से इसने डेढ़ लाख नई प्रत्यक्ष और करीब तीन लाख अप्रत्यक्ष नौकरियां पैदा की हैं। कुल मिलाकर देखें, तो यह 'मेक इन इंडिया' की कामयाबी की कहानी है, जिसे, 2047 तक विकसित राष्ट्र होने के लिए, अन्य उत्पादों के संदर्भ में दोहराना भी जरूरी है।